

**अपहारक** वि. (तत्.) छीनने वाला, बलात् ले जानेवाला पुं. 1. डाकू, लुटेरा 2. अपहर्ता।

**अपहारित** वि. (तत्.) 1. अपहरण किया हुआ, छीना हुआ, लूटा हुआ।

**अपहारी** वि. (तत्.) बलपूर्वक हरण करने वाला, छीनने-झपटने वाला पुं अपहरण हरने वाला व्यक्ति डाकू, चोर।

**अपहार्य** वि. (तत्.) 1. अपहरण के योग्य 2. छीनने योग्य 3. चोरी के योग्य।

**अपहास** पुं. (तत्.) अनुचित हँसी, अनवसर हँसी। मजाक, उपहास।

**अपहित** पुं. (तत्.) प्रतिष्ठा, हित आदि को पहुँची हानि, हित का अभाव, अहित।

**अपहृत** वि. (तत्.) 1. लूटा हुआ, चुराया हुआ 2. छीना हुआ।

**अपहृतज्ञान** वि. (तत्.) 1. जिसका ज्ञान छिन गया हो, चुराए हुए ज्ञान वाला 2. खोई सुध-बुध वाला।

**अपहृत व्यक्ति** पुं. (तत्.) व्यक्ति जिसका अपहरण कर लिया गया हो।

**अपहृतश्री** वि. (तत्.) जिसकी शोभा छीन ली गई हो, श्रीहीन, निस्तेज पुं. पराजित व्यक्ति।

**अपहेला** स्त्री. (तत्.) अवमानना, अपमान, भर्त्सना, तिरस्कार।

**अपहनुत** वि. (तत्.) छिपा हुआ।

**अपहनुति** स्त्री. (तत्.) 1. दुराव, छिपाव, बहाना 2. एक अलंकार जिसमें उपमेय का निषेध करके उपमान की स्थापना की जाती है जैसे- लक्ष्मीबाई नारी नहीं, साक्षात् दुर्गा थी।

**अपहासन** पुं. (तत्.) हास होना कमी आना, क्षय होना।

**अपांक्त** वि. (तत्.) 1. पंक्ति में साथ बैठने या भोजन करने के अयोग्य (ब्राह्मण) 2. जातिबहिष्कृत।

**अपांक्तेय** वि. (तत्.) दे. अपांक्त।

**अपांग** वि. (तत्.) दे. अपंग, अंगहीन, अंगरहित, अपाहिज। पुं. (तत्.) 1. आँख की कोर 2. अनंग, कामदेव 3. संप्रदाय-सूचक तिलक।

**अपांगता** स्त्री. (तत्.) दे. अपंगता

**अपांग दृष्टि** स्त्री. (तत्.) तिरछी चितवन।

**अपांनाथ** पुं. (तत्.) 1. जलनिधि, समुद्र, सागर 2. वरुण।

**अपाक** पुं. (तत्.) 1. पकने या पचने का अभाव, अजीर्ण, अपच 2. कच्चापन वि. (तत्.) अधपका, कच्चा।

**अपाकरण** पुं. (तत्.) 1. दूर हटाना, निराकरण करना 2. अस्वीकार करना। 3. ऋण चुकाना या कर्ज अदा करना। 4. किए जाते हुए किसी व्यवस्था को हटा देना।

**अपाक्ष** वि. (तत्.) 1. प्रत्यक्ष, आँखों के सामने उपस्थित 2. भद्दी आँखों वाला 3. नेत्रहीन वन. जो अक्ष से हटा हुआ हो।

**अपाच्य** वि. (तत्.) 1. जो पच न सके 2. जो पकाया न जा सके विलो. पाच्य।

**अपाटव** पुं. (तत्.) पटुता का अभाव, अकुशलता, चातुर्यहीनता। (वि.) 1. अपटु, अनाड़ी 2. भद्दा।

**अपाठ्य** वि. (तत्.) जो पढ़ा न जा सके, जो पढ़ने योग्य न हो; पाठ्येतर।

**अपाणिनीय** वि. (तत्.) वैयाकरण पाणिनि द्वारा प्रतिपादित नियमों के विपरीत वि. पाणिनि के बनाए सिद्धांतों के विरुद्ध किए गए व्याकरणिक प्रयोग अपाणिनीय प्रयोग कहे जाते हैं।

**अपाती** वि. (तत्.) शा.अर्थ नहीं गिरने वाला कृषि.वन. वृद्धिकाल के बाद और प्रयोजन पूर्ण हो जाने पर भी लगा रहने वाला (अंग), जैसे- बेंगन के फल बन जाने पर भी उस पर लगे रह गए बाह्य दल।

**अपाती वन** पुं. अपर्णपाती वन, वन जिसके पत्ते झड़ते नहीं सदा हरे रहते हैं, सदाबहार वन।